पाठ - 10
मसीह का क्रूस

I पाठ संबंधी विचार

1. उत्पत्ति 3:14-15 - यीशु के कष्ट का परमेश्वर ने ऐलान किया।
2. यशायाह 53 - संसार के पापों के लिए यीशु द्वारा दुख झेलने के बारे में पहले ही बताया गया था।
3. भजन 22 - दाऊद नबी ने क्रूस के दृश्य को पहले ही चित्रित कर दिया।

II विषय-वस्तु:

यीशु इस संसार में पापियों को बचाने के लिए आया। सभी के द्वारा अस्वीकार किया गया, यीशु क्रूस पर संसार के पापों की भयानक मौत सह रहा था। क्रूस परमेश्वर की ओर से पाप को दिए जाने वाले दण्ड की भयानक तस्वीर है और परमेश्वर के असीम प्रेम की तस्वीर भी है।

1. क्रूस की भविष्यवाणियां:

क) कष्ट झेलने के सम्बन्ध में परमेश्वर ने पहले ही बता दिया- उत्पत्ति 3:14-15.

ख) यशायाह ने उसे कष्ट का उद्देश्य दिखाया- यशायाह 53.

ग) दाऊद ने क्रूस के दृश्यों का चित्रण किया- भजन 22.

2. क्रूस की पीड़ा:

क) यहूदा के द्वारा पकड़वाया गया- लूका 22:3-6, 47-53; यूहन्ना 18:1-12.

ख) चेले छोड़कर चले गए- लूका 22:31-34, 54-62; मरकुस 14:43-50.

ग) शारीरिक यातना- यूहन्ना 19:1-3,17-18; मरकुस 15:15-25.

घ) ठट्ठे किए गए और अपशब्द बोले गए- मरकुस 15:29-32; मत्ती 27:27-31,38-44.

ङ) क्रूस की ओर देखकर उसकी मां को पीड़ा- यूहन्ना 19:25-27.

च) यीशु का निर्दोष होना- यूहन्ना 18:28-19:12; यशायाह 53:7-12.

छ) पिता की ओर से त्यागा गया- मत्ती 27:46.

3 क्रूस की आवश्यकता:

क) काइफा की ओर से भविष्यवाणी- यूहन्ना 11:47-52; 18-14.

ख) पाप के दण्ड को मिटाने के लिए- यूहन्ना 3:16; रोमियों 3:21-26; 5:6-21; यशायाह 53:11.

ग) परमेश्वर के पास जाने का मार्ग खोलने के लिए- यूहन्ना 6:51-56; रोमियों 8:1-11; इफिसियों 2:13-16.

4. क्रूस का तेज:

क) परमेश्वर की सामर्थ का ज़बर्दस्त प्रदर्शन- यूहन्ना 3:16-17; 12:24,32-33.

ख) यीशु ने अपने प्रेम के कारण इसे चुना- यूहन्ना 1:11,17-18; मरकुस 14:35-36.

ग) इसने यीशु के विश्वास का प्रदर्शन किया- लूका 23:46; इब्रानियों 5:9; 10:9-10; 12:2.

III व्यावहारिक प्रासंगिकताएं:

1. परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं तो हमें कष्ट झेलने में यीशु का उदाहरण अपनाना चाहिए- 1 पतरस 2:19-24; मत्ती 5:10; याकूब 1:2-12; 2 कुरिन्थियों 4:1-18.
2. हमारे अन्दर यीशु की तरह ही विश्वास होना आवश्यक है, और अपनी इच्छा को पूरी तरह परमेश्वर के आगे समर्पित कर देने के लिए तैयार रहना चाहिए- लूका 23:46; मत्ती 26:38-39; यूहन्ना 8:28-29; इब्रानियों 12:1-4.
3. हमें चाहिए कि अपने आप को दूसरों के लिए दे दें जैसे यीशु ने हमारे लिए अपने आप को दे दिया- लूका 9:23-26; यूहन्ना 13:12-17; मत्ती 28:20; मत्ती 16:15; 1 कुरिन्थियों 2:2.
4. याद रखें कि हमरा उद्धार यीशु में विश्वास से ही हुआ है, अपने धर्म के कामों से नहीं- फिलिप्पियों 3:8-10; रोमियों 4:4-8; इफिसियों 2:8; 1 तीमुथियुस 1:8-10.
5. सच्चा विश्वास आज्ञा मानने से ही दिखाया जाता है- लूका 2:51; यूहन्ना 19:3; याकूब 2:14-26; इब्रानियों 5:9; फिलिप्पियों 2:5-16.
6. हमारा उद्धार उस डाकू की तरह नहीं होता जो क्रूस पर बचाया गया, हम उसी के जैसे नहीं, बल्कि हमारा उद्धार सुसमाचार के द्वारा होता है- लूका 23:39-43; रोमियों 1:16; 1 कुरिन्थियों 15:1-4.

IV याद करने के लिए आयत- 12:32-33, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा। ऐसा कहकर उसने यह प्रकट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा।''